।। श्री गणेशाय नमः ।।

कलिकाल के अवतार श्री श्याम प्रभु की महिमा का गुणगान आज विश्व के कोने-कोने में हो रहा है । भगवान श्री कृष्ण ने बर्बरीक को अपना चतुर्भुज रूप प्रदान करके यह वरदान दिया था कि हे वीर ! कलिकाल में तुम्हारी घर-घर में पूजा मेरे नामों से होगी । आज यह बात सर्वथा सच जान पड़ती है । अलग-अलग रचनाकारों ने बर्बरीक की कथा को अपने-अपने ढंग से लिखा है । किसी ने इन्हें भीम का पुत्र बताया है तो किसी ने इन्हें घटोत्कच का पुत्र एवं भीम का पोता बतलाया है । ''ज्योति मंगल पाठ'' श्री चन्द शर्मा द्वारा रचित ''श्री श्याम अखण्ड ज्योति पाठ'' का ही सार रूप है । अनन्य श्याम भक्त गुरु सोहन लाल लोहाकार के मार्ग दर्शन एवं उनके द्वारा प्रदत्त विस्तृत जानकारी के आधार पर ही इस पाठ की रचना हुई है । आइये नित्य प्रतिदिन बाबा श्याम के इस मंगलकारी पाठ का पठन करें । इसी में ही हम भक्तों का कल्याण है । जय श्री श्याम !

— विनोद अग्रवाल ''हर्ष''

।। श्लोक ।।

प्रथम मनाऊँ गणपति, रिद्धि-सिद्धि भरतार ।
चरणों में माँ सरस्वती, वंदन बारम्बार ।।

माता पिता का ध्यान धर, गुरू को करुँ प्रणाम ।
महिमा गाऊँ आपकी, मैं ईष्ट देव श्री श्याम ।।

।। श्री श्याम ज्योति मंगल पाठ ।।

अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।
जिसने मंगल पाठ कराया, श्याम धणी की किरपा पाया ।।

दु:ख संकट भय पास ना आते, पल में सब कलेश मिट जाते ।
हारे के साथी कहलाते, सारे बिगड़े काम बनाते ।।

सबसे सुन्दर सबसे न्यारा, खाटू धाम बना है प्यारा ।
मन्दिर से सौ पग पर बहती, श्याम कुण्ड की निर्मल धारा ।।

श्याम कुण्ड की महिमा भारी, प्रगट हुए यहाँ लखदातारी ।
इक्कीस सीढ़ी उतर जो न्हाये, कट जाती है विपदा सारी ।।

सोमवती मावस का नहाना, चांदनी बारस परव सुहाना ।
ब्रह्म मुहरत में उठके नहाओं, श्याम देव मंदिर फिर जाना ।।

कोढ़ी को काया मिल जाती, निर्धन को माया मिल जाती ।
दो पीपल हैं ब्रह्म रूप में, नारी नहाके जल को चढ़ाती ।।

खटवांग नाम का एक था राजा, रूपावती में रोज नहाता ।
शिव का पुजारी सीधासाधा, भोले को नित जल वो चढ़ाता ।।

न्यायपति और धर्म पुजारी, जनता का था वो हितकरी ।
खुद खेती कर भोग लगाता, संग में रहती उसकी नारी ।।

जनता ने अनुरोध जताया, रानी के संग सन्मुख आया ।
हार श्रृंगार रहित रानी का, रूप किसी को रास ना आया ।।

लाज के मारे वो मुरझाई, हार सिंगार की रटन लगाई ।
मजबूरी वश तब कुबेर से, दूत भेज पेटी मंगवाई ।।

सोमवती मावस जब आये, शिवशंकर को जल चढ़ाये ।
अपने अपने घट को लेकर, जल भरने वो दोनो आये ।।

ज्यूंही घट को जल में डुबोया, रानी का घट डूब के खोया ।
स्वर्ण कलश राजा का बन गया, होना जो था वही तो होया ।।

वर्तमान में खाटू मध्य, वही शिवालय आज विराजे ।
मंदिर भवन पे सबसे ऊँचे, गणनायक गणराज बिराजे ।।

मकराने का भवन निराला, सन्मुख बैठा लीलेवाला ।
गोपीनाथ की छटा निराली, डयोढ़ी पे अंजनी का लाला ।।

ढ़ाई सौ वर्ष की बात पुरानी, सेवा करती इक क्षत्राणी ।
नाम नर्वदा सुकुमारी का, श्याम देव की थी दीवानी ।।

श्याम कुण्ड में रोज नहावे, श्याम देव का दर्शन पावे ।
श्याम धणी के भोग लगाकर, पीछे जल भरके अन्न खावे ।।

फागुण की फिर बारस आई, खुश हो प्रगटे श्याम बलदायी ।
वंश तुम्हारा रहेगा सेवक, क्षत्राणी को बात बताई ।।

गौड़ ब्राह्मण रहे पुजारी, वो ही सेवा का हकदारी ।
जो मांगोगी वो मैं दूंगा, जो भी मंशा होय तुम्हारी ।।

क्षत्राणी तब यू फरमायें, याद करे पर दौड़े आये ।
आके जो भी हुकम सुनावे, झूठ कभी ना होने पाये ।।

मंदिर के पश्चिम में प्यारी, श्याम बगीची की फुलवारी ।
रोज नियम से भ्रमण करने, आते जहां पे श्याम बिहारी ।।

पाण्डव कुल में अति बलवानी, भीमसेन की सुनो कहानी ।
नागदेव बाशक की कन्या, अहिलवति पहली पटरानी ।।

बर्बरीक बेटा बलकारी, कलयुग का है वो अवतारी ।
खाटू जिनका धाम बना है, पूजे जिनको जगती सारी ।।

नाम हिडिम्बा दूजी रानी, घटोत्कच बेटा बलवानी ।
सुहृदय था भीम का पोता, श्रीकृष्ण से की मनमानी ।।

घुंघराले बालों के कारण, बर्बरीक भी वो कहलाया ।
श्रीकृष्ण ने चक्र चलाया, शीश धरा पर कट के आया ।।

आगे की मैं बात बताऊँ, सच्चा ही वृतान्त सुनाऊँ ।
नागलोक का राजा बाशक, उसका सच्चा हाल बताऊँ ।।

अमृत कुण्ड का था वो देवता, कण्ठ हार शिव का बनता था ।
पार्वती मैया ने इक दिन, खुश हो कर के वर दिया था ।।

सुन्दर कन्या जन्मी प्यारी, अहिलवति वो राज दुलारी ।
रोज नियम से जल वो सींचें, शिव की भक्तन थी बड़ी भारी ।।

ताजा फूल वो चुनके लाती, शंकरजी के शीश चढ़ाती ।
ध्यान लगाकर पूजा करती, मन्त्र-मुग्ध हो महिमा गाती ।।

शिव को अपना ईष्ट बनाया, अर्न्तमन से उनको ध्याया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। १ ।।

होनी होनहार वलवानी, कब होवेगी किसने जानी ।
आँधी चली प्रचण्ड वेग से, कुछ ना समझी वो दीवानी ।।

पल में सारा बाग उजाड़ा, अहिला ने देखा वो नजारा ।
अन्तर्मन को आहत कीन्हा, गम का कारण बन गया सारा ।।

रोज की भाँति वो सुकुमारी, बासी फूल से भरी गागरी ।
जाकर शिव के शीश चढ़ाये, अनहोनी हो गई रे बावरी ।।

बासी फूल चढ़ाये शिव पे, प्रगट हुई माँ गोरा क्षण में ।
मृत पति तुम पाओगी रे, श्राप दिया था उसको पल में ।।

घोर निराशा उसपे छायी, शिवजी की गुहार लगाई ।
पिता ने आके धीर बंधाया, माता को जा सब बतलाई ।।

नाग लोक में शोक था छाया, यह सब तो होनी की माया ।
सखियाँ सारी शोक में डूबी, घर घर में मातम सा छाया ।।

नागों ने विद्रोह जताया, राजा बाशक ने समझाया ।
यह सब हैं भोल की माया, भेद कोई भी जान न पाया ।।

एक समय की सच्ची घटना, ध्यान लगाकर भक्तों सुनना ।
खेल खेल में भीमबली का, दुर्योधन को जमके धुनना ।।

मारे लाज के वो बौखलाया, मामा शकुनि ने समझाया ।
कूटनीति से उन दोनो ने, भोज निमन्त्रण उन्हें भिजाया ।।

माता कुन्ती की आज्ञा ले, पाँचो भोजन करे जावे ।
तृप्त हो चारों घर को आये, भीम तृप्त ना होने पावे ।।

खीर खिलाई जहर मिलाकर, फेकं दिया दरिया में उठाकर ।
अहिलवति ने मुर्छित पाया, नाग लोक में आया बहकर ।।

मुझको मेरा पति मिला है, अहिलवति ने ये कह डाला ।
राजा बाशक ने आकर के, मुख में थोड़ा अमृत डाला ।।

भीमसेन ने आँखे खोली, निज परिचय दे वाणी बोली ।
ऐसा क्या जो मुझे पिलाया, जिसने मेरी मुर्छा खोली ।।

बाशक अमृत कुण्ड दिखाये, पीने को मनवा ललचाये ।
आज्ञा ले जी भर के पीया, बाकी गउओं को पिलवाये ।।

इसी वजह से संत जनो ने, गौ का मूत्र शुद्ध बताया ।
अमृत जैसा दुग्ध पिलाये, गौ-माता का दरजा पाया ।।

सारी बातें भीमसेन को, बाशक जी खुलकर बतलाये ।
अहिलवति से व्याह रचाने, भीम बलि से अरज लगाये ।।

माँ आज्ञा बिन भीमसेन ने, ब्याह की अरजी को ठुकराया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। २ ।।

नारद भीम को खोजन आये, बाशक सारी बात बताये ।
राजी करके भीमसेन को, ब्याह करा कर वापस आये ।।

पार्वती संग शिवजी आये, आकर ये आशीष दिया था ।
इक बलकारी बेटा होगा, चिर आयु का वर दिया था ।।

नारद चले हस्तिनापुर को, कृष्ण मिले रस्ते में उनको ।
शीश झुका कर नारद बोले, समझ सका ना प्रभु वर तुमको ।।

रूप चतुर्भुज तब दिखलाये, नारद जी से ये बतलाये ।
नागलोक जो तुम्हें ना भेजुं, अहिला कुवांरी ही रह जाये ।।

कोख से बलधारी जन्मेगा, मेरा रूप चतुर्भुज लेगा ।
बलशाली व दानी होगा, जो मांगेगा वो दे देगा ।।

मिटे पाप और अत्याचारी, होगा वो कलयुग अवतारी ।
मेरे रूप की छवि धारेगा, होगा वो अतुलित बलधारी ।।

चार दूत ले पति के संग में, चली अहिला रहने वन में ।
पंचवटी से जरा दूर पर, सुन्दर फूल खिले उपवन में ।।

अति सुहाना बना शिवाला, मंत्रमुग्ध सा करने वाला ।
कलकल करता झरना बहता, वहाँ पे जाके डेरा डाला ।।

इक दिन घोरी राक्षसी आई, शिकार समझ कर वो गुरराई ।
अहिलवति ने दिया पछाड़ा, पलमें उसको धूल चटाई ।।

केश पकड़ तब उसको लाई, भीम के चरणों में लौटाई ।
भीमसेन ने देदी माफी, उठ करके झट दौड़ लगाई ।।

भीमसेन यूं बोले अहिला, माँ का जा दर्शन कर आऊँ ।
बहुत समय से दूर रहा हूँ, संग में कुछ दिन रहकर आऊँ ।।

अहिलवति यूँ कहे भीम से, होगी अब सन्तान तुम्हारी ।
बेटा हो या बेटी होवे, देख के जाना हे बलकारी ।।

जल्दी से वो लौट के आये, वादा अहिला से कर जाये ।
शिव को कर प्रणाम चला वो, अहिलवति का मन मुरझाये ।।

डूण्डा नाम का राक्षस भारी, जाते देख भीम बलकारी ।
भीम रूप वो धरके आया, अहिला थी पतिव्रता नारी ।।

मुख पे चमका तेज निराला, नारी का सत खाया उबाला ।
क्षण में प्रगटी अग्नि-ज्वाला, दानव भष्म हुआ मतवाला ।।

शिव की पूजा अर्चन करती, ऐसे ही दिन पूरण करती ।
पदचिन्ह भीम के साथ में रखती, धो धो कर माथे पे धरती ।।

शुभ की घड़ियाँ चलकर आई, प्रकट हुए श्याम बलदायी ।
जन्म समय बलवान हो गये, अहिला पल पल लेत बलाई ।।

नारद बोले उस पल आकर, बर्बरीक तेरा नाम रहेगा ।
गुरूमन्त्र दे आशीष दीन्हा, कलयुग तेरे नाम रहेगा ।।

बोले अहिला सुन तु मेरी, गुरू माता बन ना कर देरी ।
देवशक्ति धारी ये बालक, धन्य धन्य है कोख ये तेरी ।।

दानी में अति दानी होगा, बलशाली महादानी होगा ।
शिव को साक्षी धरके बोलूँ, दूजा ना बलवानी होगा ।।

रूप चतुर्भुज धरके आया, श्री कृष्ण की सारी माया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। ३ ।।

बालक वन में खेल रचाये, गर्जन करे शेर इक भारी ।
पकड़ के गर्दन झट से बालक, पीठ शेर की करे सवारी ।।

शेर शेरनी रोज ही आवे, क्रीड़ा-करके खेल रचावे ।
साँझ ढले निज गुफा में जावे, बालक अहिला के संग आवे ।।

बालक शिव का ध्यान लगावे, माता से जाकर बतलावे ।
मैंने देखा इक योगी को, देव देवता महिमा गावे ।।

अहिलवति बोली खुश होकर, यहीं पास में है शिवशंकर ।
रोज नियम से ध्यान लगाओ, किरपा कर देगें डमरूधर ।।

एक शिकारी वन में आया, नाहर पे जब तीर चलाया ।
कूद पड़ा था बीच में बालक, निरीह प्राणी आन बचाया ।।

पकड़ शिकारी मुक्का मारा, गिरा धरा पर वो बेचारा ।
माता क्रोधित हुई देखकर, निर्बल को क्यूं तूने मारा ।।

क्षत्री धर्म की नीति सिखाई, निर्बल की करो सदा सहाई ।
वादा करके नहीं मुकरना, प्राण जाये पर वचन न जाई ।।

अग्नि देव से अरज गुजारी, तीर-कमान की इच्छा धारी ।
आसमान से धनुष था आया, महिमा जिसकी थी बड़ी भारी ।।

गल नही सकता जल नही सकता, कभी निशाना चूक न पाये ।
यही धनुष तुम धारण करना, अग्निदेव उसको बतलाये ।।

विद्या सीखन खातिर दीन्हे, तब तक इन वाणों को धारो ।
असली वाण पास में शिव के, उनसे जाकर अरज गुजारो ।।

नागलोक में अहिला आई, बर्वरीक को साथ में लाई ।
नाना नानी से मिलवाकर, अमृत का रसपान कराई ।।

तीर कमान का भेद बताये, गुरूमाता बन धनुष सिखाये ।
जैसी माता रीत सिखाये, बालक वैसा करता जाये ।।

लिया निशाना तीर चलाया, पर्वत चूर चूर हो आया ।
राक्षस कोषासुर सुन आया, बालक हाथो जान गंवाया ।।

घोर तपस्या शिव की कीन्ही, शिव ने मनचाही कर दीन्ही ।
तीन वाण पाकर के शिव से, मनइच्छा पूरी कर लीन्ही ।।

तीन बाण है ये बलकारी, बोले शिवशंकर त्रिपुरारी ।
एक वाण से क्षेद सको तुम, एक मुहरत् में सृष्टी सारी ।।

बालक ने झट शीश झुकाया, त्रिलोकी का आशीष पाया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। ४ ।।

खडगांसुर था राक्षस भारी, कोषासुर का सुत बलकारी ।
सेना लेकर करी चढ़ाई, बांधे चारों पहेरेदारी ।।

बर्बरीक ने उन्हें छुड़ाया, दैत्य को फिर धूल चटाया ।
एक वाण से ही कर डाला, दानव की सेना का सफाया ।।

फत्ता गूजर अहिला सन्मुख, हाथ जोड़ कर जिद पे अड़ा था ।
सारी गउयें यंही चराऊँ, गउओं का भण्डार बड़ा था ।।

अहिलवति की आज्ञा लेकर, गऊ चराये सारे दिनभर ।
बर्बरीक भी साथ में जाये, पीये दूध वो दोनो छक कर ।।

डाकु भेष में भील थे आये, सारी गऊयें घेर ले जाये ।
फत्ता गूजर घायल हो गया, गउओं को अब कौन बचाये ।।

बर्बरीक ने तब ललकारा, एक वाण से किया सफाया ।
गउओं को वापस ले आया, फत्ता का मनवा हर्षाया ।।

हरित ऋषि उस वन में आये, पास शिवालय यज्ञ रचाये ।
बर्बरीक पहरा देता था, फत्ता गूजर घी पहुँचाये ।।

यज्ञ में विघ्न डालने खातिर, हाड़ माँस सोमासुर लाया ।
एक वाण से बर्बरीक ने, सेना के संग मार गिराया ।।

नारद आकर ये बतलाये, कौरव पाण्डव युद्ध रचाये ।
कौरव सेना बहुत बड़ी है, पाण्डव को अब कौन बचाये ।।

तीन वाण की महिमा जानी, बालक तुम तो हो बलवानी ।
जाकर उनका साथ निभाओ, ना करना तुम आनाकानी ।।

माता की आज्ञा सिर धारी, चला बर्बरीक बलकारी ।
मस्तक उपर तिलक लगाके, माता ने तब आरती उतारी ।।

समर भूमि की राह बताई, माता ने फिर देई बिदाई ।
साँझ ढ़ले पर मिला जलाशय, जल को पीकर प्यास बुझाई ।।

तीर सिरहाने धरकर सोया, शिवशंकर के ध्यान में खोया ।
माता को प्रणाम किया फिर, घोर नीन्द में बालक सोया ।।

अति उमंग था मन में छाया, महाभारत देखन वो आया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। ५ ।।

दानी नाम की राक्षसी आई, वेश रूपसी का धर लाई ।
लगी रिझाने बर्बरीक को, बालक को कुछ समझ न आई ।।

ज्योही हाथ पकड़ना चाहा, उसने माँ का ध्यान लगाया ।
भाल तिलक से अग्नि प्रगटी, पल में उसको राख बनाया ।।

दो दिन शेष बचे थे रणके, बर्बरीक चलता ही जाये ।
विप्र मिला रस्ते में उसको, मन की सारी बात बताये ।।

बोला विप्र सुनो ऐं बालक, काम नहीं ये तेरे वश में ।
हाथी, घोड़े, शस्त्र, पालकी, सजे खड़े है रणभूमि में ।।

तेरी माता है बड़ी भोली, बात पते की ना वो बोली ।
जाओ युद्ध जीत कर आओ, तीन वाण दे तुझको बोली ।।

बोले बर्बरीक ब्राह्मण से, माता ने दीन्ही है शिक्षा ।
एक वाण से रण मैं जीतूँ, ले लो चाहे मेरी परीक्षा ।।

ब्राह्मण ने आदेश दिया था, पीपल का वृक्ष क्षेद दिया था ।
रूप चतुर्भुज धारण करके, ब्राह्मण ने निज भेद दिया था ।।

अपना रूप दिया बालक को, अपना नाम दिया पालक को ।
बलियों में बलि भूप रहोगें, भगवन बोले उस बालक को ।।

कलिकाल के तुम अवतारे, घर-घर में पूजेंगे सारे ।
हारे के साथ कहलाओ, निर्बल के बन जाओ सहारे ।।

बालक बोला इसी रूप में, रोज नियम से दर्शन चाहूँ ।
ग्यारस के दिन दर्शन कीन्हा, बारस को भी दर्शन पाऊँ ।।

बारस के दिन नहाय धोयकर, चला ढूढने वो मुरलीधर ।
कौरव दल में जाकर पूछे, कहां मिलेगा वो नटनागर ।।

बोला एक सिपाही उसको, जिस रथ पे हनुमान बिराजे ।
ढूंढो आगे जाकर उसको, मुरलीधर भी वहीं बिराजे ।।

जाकर उसने शीश नवाया, आने का कारण बतलाया ।
एक बाण से रण जीतूंगा, उसने सारा भेद बताया ।।

दान मांगती ये रणभूमि, बोले उससे कृष्ण मुरारी ।
तीन वीर है यहाँ बलधारी, मैं, अर्जुन और तुम बलकारी ।।

तीनों में जो सबसे दानी, आगे आवे वो ही प्राणी ।
शीश दान तो मैं ही दूंगा, बर्बरीक ने हठ ये ठानी ।।

रूप चतुर्भुज तब दिखलाया, बर्बरीक बोला यूँ झुककर ।
युद्ध देखने की मंशा है, कोई उपाय करो हे प्रभुवर ।।

शीश का दान दिया पल भरमें, एक हाथ में लिए कटारी ।
देवों ने शंखनाद बजाया, फूलों की हुई बरखा भारी ।।

देकर के अपनी परछाई, खम्ब शिखर पर शीश बिठाया ।
दिव्य ज्योति देकर के छलिया, शीश बिठा निज रथ पे आया ।।

रणभूमि का बिगुल बजा और, युद्ध भयंकर फिर छिड़ आया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। ६ ।।

विजय हुई पाण्डव की रण में, पाँचो पाण्डव खुशी मनाये ।
अपने बल का यशोगान कर, भीमबली ज्यादा इतराये ।।

गर ना घूमे गदा ये मेरी, अर्जुन के जो तीर न चलते ।
जीत न पाते हम महाभारत, रहते निज हाथों को मलते ।।

धर्मराज ने बात बताई, कृष्ण की सारी माया भाई ।
करता करने वाला वो ही, भीम को बात रास ना आई ।।

मैं नही मानू कृष्ण की माया, महाभारत बस मैंने जिताया ।
मेरी गदा ने रणभूमि में, जाने कितना कहर बरपाया ।।

एक बली है यहाँ पे ऐसा, जिसने सारे रण को देखा ।
चलो फैसला उस पर छोड़े, पूछें उसने क्या-क्या देखा ।।

शीश के दानी ने बतलाया, ये सारी छलिये की माया ।
जो कुछ देखा उसने रण में, सच्चा सच्चा हाल सुनाया ।।

संघारक थे बने मुरारी, लाश बिछाये चक्रधारी ।
काली खप्पर भर भर पीवे, मुण्डो की माला गलधारी ।।

प्रभुवर बने थे लीलाधारी, क्या समझेगा कोई अनाड़ी ।
शीश झुका कर भीम सेन ने, मन में सारी बात विचारी ।।

अर्जुन बोले कहों कन्हाई, दो दो लीला समझ न आई ।
एक युद्ध को देख रही है, दूजी ने ही राड़ मचाई ।।

कृष्ण ने अर्जुन को बतलाया, मैंने ही ये युद्ध रचाया ।
अन्त समय द्वापर का आया, आगे कलयुग की है छाया ।।

आगे की है किसने जानी, यहाँ मरेगें सब बलवानी ।
धीरज धरके हे बलवानी, कलियुग की तुम सुनो कहानी ।।

मंदबुद्धि जन्मेगा प्राणी, वहाँ धर्म की होगी हानि ।
बल में क्षीण रहेगें सारे, पाप नीति में चतुर सुजानी ।।

उनकी रक्षा कौन करेगा, देव शक्ति ये शीश रहेगा ।
मेरा रूप देव अवतारी, भगतों का कल्याण करेगा ।।

कलियुग का अवतारी होगा, महादानी दातारी होगा ।
निज भगतों को ढूंढ बुलाये, देव बड़ा बलकारी होगा ।।

ज्युँ ज्युँ कलयुग घोर पड़ेगा, श्याम देव का जोर बढ़ेगा ।
उसके संकट मिट जावेगें, चरणो में जो शीश धरेगा ।।

इसकी महिमा जो गायेगा, मुझको वो ही प्यारा होगा ।
सच्चे मन से ध्यान धरे जो, उस प्राणी का सहारा होगा ।।

लीले घोड़े करे सवारी, देव यही साक्षी अवतारी ।
चंदन खुश्बू बदन से आवे, महिमा इसकी होगी भारी ।।

देव मुनिजन को बुलवाये, उनको सारी कथा सुनाये ।
लोहागरजी को बुलवाके, उनके हाथों शीश थमाये ।।

लोहागर जी ने ठीक समय में, विधि विधान से पूजा करके ।
रूपावति में छोड़ दिया था, चला शीश उस धार में बहके ।।

खाटू नगरी बहकर आया, एक जगह पर डेरा जमाया ।
आगे धरके ध्यान सुनोजी, खाटू वाले की सब माया ।।

एक गाय रोजाना आवे, एक जगह पर ही रूक जावे ।
अपने आप ही उसके थन से, दूध की धारा बहती जावे ।।

चर्चा हो गई इसकी भारी, होय इकट्ठा जनता सारी ।
लगी खोदनें उस भूमि को, परचा दिये देव बलकारी ।।

सुनो ध्यान से जनता सारी, कलयुग का हूँ मैं अवतारी ।
मंदिर में स्थापित करवाओं, शीश की महिमा है बड़ी भारी ।।

शीश बिठाया मंदिर माहीं, लगे पूजने लोग लुगाई ।
कलिकाल में सबने देखी, श्याम धणी की ये सकलाई ।।

सम्वत् दो हजार सन्तावन, शुक्ला ग्यारस जेठ महीना ।
ज्योति मंगल पाठ श्याम का, ''हर्ष'' भगत ने पूरा कीन्हा ।।

अखण्ड पाठ की पूरण गाथा, सार रूप में जो भी गाता ।
श्याम देव की किरपा से ही, पूरण पाठ का फल वो पाता ।।

शीश जहां पर बह कर आया, श्याम कुण्ड वो ही कहलाया ।
अखण्ड ज्योति है अपार माया, श्याम देव की परबल छाया ।। ७ ।।

दोहा

श्याम देव की ज्योत ले, करेगा जो ये पाठ ।
श्याम धणी की किरपा से, सदा रहेगें ठाठ ।।

।। आरती श्री श्याम जी की ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे,
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ ।।
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चवँर ढुरे,
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ ।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे,
खेवत धूप, अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ।। ॐ ।।
मोदक, खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे,
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ ।।
झांझ, कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे,
भक्त आरती गावे, जय जय कार करे ।। ॐ ।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे,
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम श्याम उचरे ।। ॐ ।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे,
कहत 'आलुसिंह' स्वामी, मनवांछित फल पावे ।। ॐ ।।
ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे,
निज भक्तों के तुमने पूरण काम करे ।। ॐ ।।